दिनांक–20.02.2025 UG Third Semester MjC (Philosophy)

न्याय दर्शन में अलौकिक प्रत्यक्ष के प्रकार

अलौकिक प्रत्यक्ष तीन प्रकार के हैं–(1) सामान्य लक्षण, (2)ज्ञान लक्षण, (3) योगज।

(1) **सामान्य लक्षण:** एक ही प्रकार की वस्तुओं में समान धर्म होने के कारण वे एक ही नाम से पुकारी जाती हैं। हरि, मोहन, सोहन इत्यादि समस्त व्यक्ति मनुष्य कहलाते हैं। इन सभी मनुष्यों में मनुष्यत्व सामान्य लक्षण है। सामान्य लक्षण एक ऐसा सर्वमान्य गुण है जो वर्ग के समस्त जीवों को सूचित करता है। लौकिक प्रत्यक्ष के द्वारा सभी मनुष्यों का ज्ञान सम्भव नहीं, किन्तु यह निर्विवाद है कि सम्पूर्ण मनुष्य जाति का ज्ञान हमलोगों को प्राप्त है। न्याय दर्शन के अनुसार मनुष्य जाति का ज्ञान अलौकिक प्रत्यक्ष के द्वारा होता है।

(2) **ज्ञान लक्षण:** ज्ञान का लक्षण मनोविज्ञान के सन्निकटता के नियम (Law of association) पर आधारित है। हम कहते हैं कि चाय गर्म दीख पड़ती है, पत्थर ठोस दीख पड़ता है, घास कोमल दिखाई पड़ती है, किन्तु गर्मी, ठोसपन तथा कोमलता स्पर्श के द्वारा जानी जाती है—वह आँखों से देखने की चीज नहीं। पश्चात्य मनोवैज्ञानिक- Stout, Wundt इत्यादि ऐसे अनुभवों को Complications की संज्ञा देते है, अर्थात् भिन्न-भिन्न इन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान आपस में मिलकर एक हो जाते हैं। इसतरह एक हो जाने पर एक इन्द्रिय किसी दूसरी इन्द्रिय के ज्ञान का अनुभव कर सकती है।

न्याय दार्शनिकों का कथन है कि अतीत में कई बार हमने घास को देखा है, साथ ही स्पर्श के द्वारा उसकी कोमलता को जाना है। इसप्रकार घास के रंग और कोमलता में एक तादात्म्य स्थापित हो गया है। यही कारण है कि घास को देखने से उसकी कोमलता का अनुभव हो जाता है। इसतरह का अनुभव अतीत ज्ञान के कारण होता है, इसलिए इसे ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष कहते हैं।

(3) **योगज:** योगाभ्यास के द्वारा अलौकिक शक्ति प्राप्त व्यक्तियों को भूत, भविष्य सूक्ष्म और गूढ़ सभी प्रकार की वस्तुओं की साक्षात अनुभूति होती है। योगज प्रत्यक्ष भारत के अधिकांश दार्शनिकों को मान्य है। वेदान्त दार्शनिक सामान्य लक्षण एवं ज्ञान लक्षण को नहीं मानते, किन्तु योगज में वे विश्वास करते हैं. क्योंकि इसे योगशास्त्रसम्मत समझा जाता है।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com